प्रयाग एवं कुम्भ

(रामचरित मानस के परिपेक्ष्य में)

पं. रमाशङ्कर गौड़

विश्व की सबसे प्राचीनतम एवं जीवन्त संस्कृति भारतीय संस्कृति ही है। यहाँ धर्म, श्रद्धा, विश्वास एक दूसरे में समाहित हैं। इस पुण्य सलिला भारत भू पर धार्मिक आस्थाओं के इतने आयोजन मेले हैं कि उनकी गणना करना संभव नहीं है।

इसी भारत भूमि पर पृथ्वी का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन तीर्थराज प्रयाग के संगम तट पर मकर संक्राति १४ जनवरी २०१९ से कुम्भ के रूप में आरम्भ हुआ। ४९ दिन (१४ जनवरी मकर संक्राति से ४ मार्च महाशिवरात्रि) तक चलने वाले इस कुम्भ-महापर्व पर १५ करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान था। उपस्थिति अनुमानिक संख्या से कहीं अधिक रही। ३२०० हैक्टर क्षेत्र में १८ सैक्टरों में विस्तारित इस मेले पर ४५०० करोड़ रूपये खर्च किये गये थे। १० लाख टैन्ट लगाये गये उत्तर-प्रदेश सरकार का एजेन्डा स्वच्छ कुम्भ और स्वस्थ गंगा था। व्यवस्था के लिये २ लाख कर्मचारियों की सेवा ली गई। साधुओं के अखाड़े - जूना, निरंजनी, उदासीन (बडा एवं नया), महानिर्वाणी, निर्वाणी, निर्मोही, निर्मल पंचायती, पंचायती, आव्हान, अग्नि, आनन्द, दिगम्बर आदि ने अपनी-अपनी उपस्थिति प्रदर्शित की। सर्वत्यागी संत, महामण्डेलश्वर, मण्डलेश्वर, महंत, मठाधीश, गादीपति, सन्यासी सहित प्रत्येक हिन्दू इस कुम्भ में संगम के पवित्र जल में स्नान करने की अपनी कल्पना संजोये चला आया। माना जाता है कि महाकुम्भ प्रारम्भ २५२० वर्ष पूर्व हुआ था। कालान्तर में इसके प्रवर्तक आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य थे।

कुम्भ का आशय कलश (घड़े, मटकी) से है जिसमें समस्त देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित विराजित है। चिर पुरातन काल से नीति-अनीति का संघर्ष होता रहा है। नीति के प्रतिपालक देव कहे गये है तो अनीति असुरों की पोषित की गई है। देवासुर संग्राम की प्राचीन परम्परा को वेद से लेकर पुराणों तक में वर्णित किया गया है। सर्वजन हिताय, सदैव जीवित रहने की अभिलाषा हेतु अमृत की खोज, मानव जीवन के निरन्तर अनुसंधान का अन्वेषक विषय रहा है, वर्तमान तक। इसी अमृत के लिये समुद्र का मंथन किया गया था -

देव दानव संवादे, मध्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोसि तदा कुभं, विधृतो विष्णुना स्वयं॥

यह वर्णन समुद्र मंथन को वर्णित करता है। समुद्र मंथन के लिये पर्वतराज मंदिराचल की मथनी बनाई गयी और महानागराज वासुकि को रज्जु (रस्सी)। डूबती मथनी को आधार देने के लिए विष्णु भगवान को

स्वयं कच्छप (कछुवे) के रूप में अवतरित होना पडा। वासुकि को मुख की ओर से दानवों ने थामा और पूँछ से खींचकर मथने की जिम्मेदारी देवताओं को मिली। वासुकि की फुंकार से दैत्यों का रंग काला हो गया। १४ रत्नों में सर्वप्रथम अमृत का सहोदर गरल विष निकला। पृथ्वी पर हलाहल से हलचल मच गई, देवों के देव महादेव से प्रार्थना की गई, शिव ने उस गरल को अपने कण्ठ में धारण किया। विष धारण करने से विषपायी एवं कण्ठ नीला हो जाने से नीलकण्ठ कहलाये। फिर चन्द्रमा का प्रादुर्भाव हुआ, विष सहोदर को विष शमन हेतु शान्तेश्वर शङ्कर को प्रदान किया गया, इसलिये वे चन्द्रमौलि हुए। फिर निकले लक्ष्मी, शार्ङ्ग धनुष, कौस्तुभ मणि, कौमुदी गदा, शंख इन रत्नों को रमापति चतुर्भुज विष्णु ने ग्रहण किया। बाद में निकले रम्भा, उच्चैश्रवा, कामधेनु, ऐरावत, पारिजात जो इन्द्र के सानिध्य में प्रतिस्थापित हुए। अन्ततः अमृत कुम्भ सहित आयुर्वेद प्रवर्तक भगवान धन्वन्तरि का प्राकट्य हुआ। जिनकी जयन्ती दीपावली पूर्व त्रयोदशी को मनाई जाती है। असुरों को अमृत से वंचित करने के लिए बाद में विष्णु को मोहिनी रुप में अवतार लेना पड़ा।

देवगुरु बृहस्पति के निर्देश पर इन्द्र पुत्र जयन्त अमृत कुम्भ लेकर भाग पड़ा, दैत्य उसके पीछे। पृथ्वी के अनुक्रम में १२ वर्षों तक युद्ध होता रहा इस काल में जहाँ-जहाँ कलश प्रतिस्थापित किया एवं उसमें से अमृत कण छलके वे स्थान सिंहस्थ महापर्व के हेतु बने, उसे कुम्भ-महाकुम्भ कहा जाने लगा। बृहस्पति, सूर्य एवं चन्द्र के योगदान के कारण इनके संयोजन पर कुम्भ होते हैं। हरिद्वार के गङ्गा तट पर कुम्भराशि के बृहस्पति में, मेष राशि के सूर्य होने पर, प्रयागराज में गङ्गा-जमुना-सरस्वती (गुप्त) के सङ्गम तट पर माघी अमावस्या को मकर राशि में सूर्य, चन्द्र तथा वृषभ राशि में बृहस्पति होने पर, नासिक में गोदावरी तट पर, सिंह राशि के बृहस्पति में सिंह राशि का सूर्य होने पर कुम्भ का आयोजन होता है। इस प्रकार चार वर्षों में कुम्भ और उस विशिष्ठ स्थान पर १२ वर्षों के उपरान्त कुम्भ का होना निश्चित होता है।

मकरे च दिवानाथे, वृष राशि गतौ गुरौ।
प्रयागे कुम्भ योगो च, माघ मासे विधुक्षये॥

महाकवि संत तुलसीदास जी महाराज ने अपने रामचरित मानस में इसका वर्णन किया है। यही नही उन्होंने प्रयागराज की महिमा अनेक स्थानों पर प्रकट की है - राम कथा श्रवणकर्ता श्री भरद्वाज मुनि का आश्रम प्रयाग तट पर ही कहा गया है। यहीं उन्होंने याज्ञवल्क्य जी से राम कथा सुनी थी। बालकाण्ड़ में तुलसी लिखते है -

चौपाई - माघ मकरगत रबि जब होहि। तीरथपतिहि आवे सब कोई॥
देव दनुज किन्नर नर श्रेनी। सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी॥
पूजहिं माधव पद जलजाता। परसि अखय बटु हरषहि गाता॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन। परम रम्य मुनिबर मन भावन॥

तहाँ होई मुनि रिषय समाजा। जाहि जे मज्जन तीरथ राजा॥
मज्जहि प्रात समेत उछाहा। कहहि परस्पर हरि गुन गाहा॥
दोहा - ब्रह्म निरुपन धरम बिधि बरनहि तत्व विभाग।
कहहि भगति भगवतं कै संजुत ग्यान बिराग॥४४॥
चौपाई - एहि प्रकार भरि माघ नहाही। पुनि सब निज-निज आश्रम जाहि॥
प्रति संबत अति होई अनंदा। मकर मज्जि गवनहि मुनिबृंदा॥

अयोध्या काण्ड में इस तीर्थ स्थान की महिमा का गुणगान कवि तुलसी ने श्रीराम के मुख से इस प्रकार वर्णित किया है -

चौपाई - प्रात प्रातकृत करि रघुराई। तीरथराजु दीख प्रभु जाई॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी। माधव सरिस मीतु हितकारी॥
चारि पदारथ भरा भंडारु। पुन्य प्रदेश देस अति चारू॥
छेत्रु अगम गढु गाढ सुहावा। सपनेहुँ नहीं प्रति पच्छिन्ह् पावा॥
सेन सकल तीरथ बरबीरा। कलुष अनीक दलन रन धीरा॥
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा॥
चँवंर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहि दुख दारिद भंगा॥
दोहा - सेवहि सुकृति साधु सुचि, पावहि सब मन काम।
बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम ॥१०५- अयोध्या॥
चौपाई - को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुख पावा॥
कहि सीय लखनहि सखहि सुनाई। श्रीमुख तीरथराज बडाई॥
करि प्रनामु देखत बनबागा। कहत महातम अति अनुरागा॥
एहि बिधि आई बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुंमगल देनी॥
मुदित नहाई कीन्हि सिव सेवा। पूजि जथाबिधि तीरथ देवा॥

इन्हीं प्रयागराज की महिमा तथा चत्वार फल(धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को देने वाले प्रयाग स्नान के पुण्य को रुपक रुप में गोस्वामी तुलसीदास जी ने बालकाण्ड में वर्णित किया है -

चौपाई - मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू॥
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्मा विचार प्रचारा॥
विधि निषेधमय कलिमल हरनी। करम रबिनंदनि बरनी॥
हरि हर कथा बिराजति बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी॥

बटु बिसवास अचल निज धरमा। तीरथराज समाज सुकरमा॥
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ। देत सद्य फल प्रगट प्रभाऊ॥
दोहा - सुनि समुझहि जन मुदित मन, मज्जहिं अति अनुराग।
लहहि चारि फल अछत तनु, साधु समाज प्रयाग॥२२॥

विष्णु पुराण में कुम्भ स्नान का महत्व अश्वमेध, वाजपेयी यज्ञ और पृथ्वी प्रदक्षिणा से कई गुना ज्यादा बताया गया है। प्रयागराज में तो विशेष ही है -

अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः स्नानेन तत्फलम्॥
प्रयागे माघ मासे कुम्भ पर्वेषु, त्रय स्नानस्य यत्फलम्।
अश्र्वमेध सहस्त्रेण तत्फलम् लभते भुवि॥

तिथियाँ - मकर संक्राति १४ जनवरी, माघ (मौनी) अमावस्या, बसन्त पंचमी, माघ पूर्णिमा, महाशिवरात्रि आदि है।

सेवानिवृत्त अभिलेखागार
संपादक - ''विप्र गौरव पत्रिका''
सचिव- राज. वित सेवा समिति,
जयपुर